क्रियायोग अनुसन्धान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति

संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

क्रियायोग
हं क्षं
परमात्म अनुभूति का सर्वोच्च मार्ग

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo.ca

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है

क्रम संख्या.....

दिनाँक.....

प्रकाशनार्थ

30 जनवरी, कुम्भ मेला समाचार - क्रियायोग शिविर

क्रियायोग ध्यान से जीवभाव की मुक्ति

30 जनवरी 2013 इलाहाबाद । कुम्भ मेले क्षेत्र में मुक्तिमार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय संत क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि प्रभु का दृश्य रूप ब्रह्माण्ड के रूप में प्रकाशित है । दृश्य रूप की किसी भी रचना का ईश्वरीय प्रेम से निरीक्षण करने पर स्पष्ट हो जाता है कि अस्तित्व केवल एक परमतत्व का है जिसे परब्रह्म कहते हैं । वही परब्रह्म सारे रूपों में प्रकाशित हो रहे हैं। इसको समझने के लिए बीज पर अपनी अन्तरदृष्टि केन्द्रित कर देने पर स्पष्ट हो जाता है कि बीज के अंदर चुभ कर पीड़ा पहुँचाने वाला नुकीला काँटा व मुलायम पँखुड़ियाँ दोनों दिखायी पड़ते हैं और यही बीज काँटे और पुष्प के रूप में भी प्रकट होता है । क्रियायोग ध्यान में जब हम अपनी एकाग्रता को अपने स्वरूप में केन्द्रित करते हैं तो अनुभव होता है कि यह स्वरूप समुद्र की लहर के रूप में प्रकट होता है । समुद्र अगर परब्रह्म हैं तो उसमें लहर का स्वरूप मनुष्य अस्तित्व के रूप में है । समुद्र का सम्पूर्ण चेतन रूप अगर आत्मा है तो लहर का चेतन रूप जीवात्मा है।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने विषय पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि मनुष्य जब यह सोचता है कि परमात्मा हमसे दूर और अलग हैं तो मनुष्य का स्वरूप जीवात्मा के रूप में होता है और जब मनुष्य परब्रह्म के साथ पूर्ण एकता की अनुभूति करता है तो जीवात्मा भाव विलीन होकर आत्मभाव

क्रियायोग का विश्वव्यापी प्रसार एक ऐसे अखण्डित विश्व का सूत्रपात करेगा
जिसके शासक स्वयं परमचैतन्य परमात्मा होंगे ।

प्रकट हो जाता है । जिस प्रकार लहर समुद्र से उठती है और उसी में विलीन होती है उसी प्रकार जीवात्मा भाव जीव से प्रकट होता है और उसी में विलीन हो जाता है । इसे और स्पष्ट जानने के लिए आत्मा और जीवात्मा स्वरूप को काया और छाया के रूप में समझना चाहिए । जिस प्रकार छाया वस्तु से विविध आकारों के रूप में प्रकट होते हुए काया में विलीन हो जाती है उसी प्रकार जीव भाव आत्मभाव से प्रकट होकर फिर आत्मभाव में विलीन होता रहता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि जब मनुष्य अपने स्वरूप या अन्य किसी भी रचना को देखकर छोटा-बड़ा, मोटा-पतला, काला-गोरा आदि तुलनात्मक भाव से निरीक्षण करते हुए उसे स्वीकार करता है तो वह जीव भाव में होता है और इस भाव के कारण वह जन्म-मृत्यु, सुख-दुःख, लाभ-हाँनि, पाप-पुण्य, यश-अपयश आदि अनुभूतियों के साथ सीमित जीवन व्यतीत करता है । क्रियायोग ध्यान की गहराई में उतरने पर साधक जीव भाव से मुक्त होकर आत्मभाव में स्थापित हो जाता है और वह अनुभव कर लेता है कि उसके अस्तित्व का प्रत्येक अंश परमात्मा के स्वरूप से उसी तरह संयुक्त है जैसे दहकती हुई आग के साथ उसकी गर्मी । जब मनुष्य अपने स्वरूप और ब्रह्माण्ड की समस्त रचनाओं को उसके वास्तविक स्वरूप में अनुभव कर लेगा तब वह सम्पूर्ण कष्टों से मुक्त हो जाएगा और इस अवस्था की प्राप्ति को मोक्ष कहते हैं ।

क्रियायोग का कार्यक्रम प्रतिदिन प्रातः, दोपहर तथा सायं हिन्दी तथा अँग्रेजी भाषा में बड़े ही प्रभावशाली रूप में सम्पन्न हो रहा है । क्रियायोग शिविर में भारत तथा विश्व के अन्य राष्ट्र कनॉडा, अमरीका, सिंगापुर, रुस, गयाना, ब्राजील, पोलैण्ड आदि विभिन्न देशों से आये हुए साधक, विद्यार्थी, चिकित्सक, इंजीनियर तथा कुम्भ क्षेत्र के कल्पवासी और तीर्थयात्री भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

- योगमाता